

# सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-5: औरतो ने बदली दुनिया



पिछले अध्याय में हमने देखा कि महिलाओं द्वारा किया जाने वाला घर का काम काम ही नहीं माना जाता है तथा इसका कोई निश्चित समय भी नहीं है इस अध्याय में घर के बाहर के कामों को देखेंगे और समझेंगे कि कैसे कुछ व्यवसाय महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त समझे जाते हैं और इस अध्याय में महिला आंदोलनों को भी जानेंगे।

### महिलाओं की रूढ़िवादी भूमिकाएं

एक स्टीरियोटाइप किसी व्यक्ति, समुदाय या स्थान के बारे में एक धारणा या पूर्वकल्पित धारणा है जो किसी तर्क या कारण से समर्थित नहीं है। उदाहरण के लिए, लड़कियों से धीरे-धीरे बात करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन लड़के आक्रामक हो सकते हैं।

आज बहुत से लोग रूढ़िवादिता में विश्वास करते हैं। उदाहरण के लिए, महिलाओं को कोमल और धैर्यवान माना जाता है। यही कारण है कि कुछ व्यवसायों को विशेष रूप से महिलाओं के लिए निर्मित माना जाता है। उदाहरण के लिए, लगभग सभी नर्स और रिसेप्शनिस्ट महिलाएं हैं। दूसरी ओर, पुरुषों को वैज्ञानिक, पायलट, सेना के पुरुष और पुलिस के रूप में माना जाता है क्योंकि लोग रूढ़िवादी धारणा में विश्वास करते हैं कि इन व्यवसायों के लिए तकनीकी दिमाग और शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसमें आमतौर पर महिलाओं की कमी मानी जाती है। अधिकांश परिवारों में बालिकाओं की शिक्षा को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। लड़कियों की तुलना में लड़कों की शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है।



लगभग सभी नर्स महिलाएं ही होती हैं

## उन्नीसवीं सदी में महिलाएं

- उन्नीसवीं सदी में कई स्कूल खोले गए, लेकिन महिलाओं से पढ़ने-लिखने की अपेक्षा नहीं की गई थी।
  - कई लोगों ने लड़कियों की शिक्षा का विरोध किया और परिणामस्वरूप महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा।
  - हालांकि, शिक्षित होने वाली महिलाओं ने महिलाओं की शिक्षा के प्रति लोगों के सामान्य रवैये पर सवाल उठाना शुरू कर दिया।
- इस दौरान कुछ महिलाएं ऐसी भी रहीं जिन्होंने विरोध के बीच न सिर्फ पढ़ना-लिखना सीखा बल्कि महिलाओं की शिक्षा की दिशा में भी काम किया। इनमें से कुछ महिलाएं और उनकी उपलब्धियां इस प्रकार हैं:

### राससुंदरी देवी (1800-1890)

- उनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। उन्हें भारत की पहली महिला माना जाता है जिन्होंने अपनी आत्मकथा 'अमर जीवन' शीर्षक से लिखी है।
- वह एक अमीर जमींदार के परिवार से संबंधित एक गृहिणी थी जहाँ महिलाओं को पढ़ने और लिखने की अनुमति नहीं थी। यह माना जाता था कि एक शिक्षित महिला अपने पति के लिए दुर्भाग्य लाती है।
- राससुंदरी देवी ने गुप्त रूप से पढ़ना और लिखना सीखा क्योंकि वह चैतन्य भागवत (एक संत के जीवन पर आधारित पुस्तक) पढ़ना चाहती थीं।
- वह अक्सर आधी रात को अपने पढ़ने का काम करती थी जब सब सो रहे होते थे।
- राससुंदरी देवी ने पढ़ना सीखने के लिए अपने बेटे की किताबों की मदद ली। लंबे समय के बाद उसने पढ़ना सीखा, आखिरकार चैतन्य भागवत पढ़ने में सक्षम हो गई।
- बाद में उन्होंने लिखना भी सीखा और अपनी आत्मकथा भी लिखी जिसमें उन्होंने प्रतिदिन घर पर अपने व्यस्त कार्य दिनचर्या पर चर्चा की।

### पंडिता रमाबाई (1858-1922)

- पंडिता रमाबाई ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया।
- उनकी शिक्षा उनके माता-पिता ने घर पर ही की थी।
- पढ़ाई के प्रति उनकी उत्सुकता के कारण, उन्होंने न केवल संस्कृत सीखी बल्कि मराठी और बंगाली भी सीखी।



**पंडिता रमाबाई**

- संस्कृत भाषा के उनके ज्ञान के कारण उन्हें 'पंडिता' की उपाधि से सम्मानित किया गया।
- उन्होंने महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, 1898 में, उन्होंने पुणे के पास खेड़गांव में एक मिशन की स्थापना की। इस मिशन ने न केवल लड़कियों और विधवाओं को शिक्षा प्रदान की बल्कि उन्हें स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित भी किया।
- इस मिशन में महिलाओं को बढ़ईगीरी और प्रिंटिंग प्रेस चलाने जैसी कई कलाओं और शिल्पों का प्रशिक्षण दिया गया।
- उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज में पंडिता रमाबाई का योगदान अत्यधिक प्रशंसनीय है।

#### **रोकैया सखावत हुसैन (1880-1932)**

- रोकैया सखावत हुसैन का जन्म एक धनी परिवार में हुआ था। हालाँकि उन्हें उर्दू पढ़ना और लिखना सिखाया गया था, लेकिन उन्हें अंग्रेजी और बांग्ला भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया। यह महसूस किया गया कि इन दोनों भाषाओं को सीखने से लड़कियों को नए विचारों का पता चलेगा।



**बेगम रुकय्या सखावत हुसैन**

- हालांकि उन्होंने गुप्त रूप से बांग्ला और अंग्रेजी भाषा सीखी और एक लेखिका बन गईं।
- उनकी प्रसिद्ध कृति 'सुल्ताना ड्रीम्स' नामक कहानी है। इस कहानी में, सुल्ताना नाम की एक महिला लेडीलैंड नामक स्थान पर पहुँचती है जहाँ महिलाओं को अध्ययन, सीखने और नवाचार करने की स्वतंत्रता थी। इस प्रकार उनकी कहानी में महिलाएं उन्नीसवीं शताब्दी में बरिश् और उड़ने वाले विमानों को नियंत्रित कर रही थीं।
- बाद में 1910 में, उन्होंने कोलकाता में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला, जो आज भी काम कर रहा है और इसे सखावत मेमोरियल गर्ल्स स्कूल के नाम से जाना जाता है।

## लड़कों और लड़कियों की शिक्षा के बीच अंतर

- आज लड़के और लड़कियां दोनों बड़ी संख्या में स्कूलों में जाते हैं। हालांकि, लड़के और लड़कियों की शिक्षा में अभी भी अंतर है।
- हर दस साल के बाद सरकार द्वारा की जाने वाली जनगणना हमें भारत में रहने वाले लोगों के बारे में जानकारी प्रदान करती है जैसे साक्षर लोगों का प्रतिशत, लिंग अनुपात, पुरुषों और महिलाओं के व्यवसाय आदि के बारे में।
- साक्षरता के स्तर का अनुमान लगाने के लिए सात वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों को ध्यान में रखा जाता है। उन्हें साक्षर माना जाता है यदि वे कम से कम अपना नाम लिखने में सक्षम हों।
- 1961 की जनगणना के अनुसार, सभी लड़के और पुरुषों में से लगभग 40 प्रतिशत साक्षर थे जबकि सभी लड़कियों और महिलाओं में से केवल 15 प्रतिशत ही शिक्षित थे।
- 2001 की जनगणना में जहां 76% पुरुष साक्षर थे, वहीं महिलाओं की साक्षरता दर केवल 54% थी। शिक्षित महिलाओं का प्रतिशत अभी भी शिक्षित पुरुषों के प्रतिशत से कम है।
- अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि दलित और मुस्लिम लड़कियों की साक्षरता दर भारत की कुल महिला आबादी की साक्षरता दर से कम है।
- आंकड़े बताते हैं कि मुस्लिम लड़कियों की साक्षरता दर दलित लड़कियों से भी कम थी।

## दलित, मुस्लिम और आदिवासी बच्चों में कम साक्षरता दर के कारण

- ग्रामीण और गरीब क्षेत्रों में उचित स्कूलों का अभाव।

- कई स्कूल गांवों से कई किलोमीटर दूर स्थित हैं। यातायात की समुचित व्यवस्था के अभाव में बच्चों को स्कूल छोड़ना पड़ता है।
- कई परिवार इतने गरीब हैं कि वे अपने बच्चों को शिक्षित करने का खर्च वहन करने में असमर्थ हैं।
- उच्च जाति के बच्चों और शिक्षकों द्वारा भेदभाव किए जाने के कारण कई दलित बच्चे अपना स्कूल छोड़ देते हैं।



कई दलित और आदिवासी परिवार गरीबी के कारण अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते हैं

## महिला आंदोलन

महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, कानूनी अधिकार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपने सभी अधिकार स्वतः प्राप्त नहीं हुए हैं। उन्हें अपना हक पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उनके द्वारा किए गए संघर्षों को महिला आंदोलन के रूप में जाना जाता है। महिलाओं को इन अधिकारों को हासिल करने में मदद करने के लिए कई महिलाओं, संगठनों और पुरुषों ने महिला आंदोलन में भाग लिया है। महिलाओं के अधिकारों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए अपनाई जाने वाली कुछ रणनीतियाँ हैं:

### अभियान

- अभियान महिलाओं को उनके खिलाफ किए जाने वाले भेदभाव के खिलाफ विरोध करने और लड़ने में मदद करते हैं।
- 2006 में, कई अभियानों के परिणामस्वरूप, एक कानून पारित किया गया जिसने महिलाओं को घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनी सुरक्षा प्रदान की।



महिलाओं ने अभियानों का संचालन किया

- विभिन्न महिला संगठनों द्वारा नुककड़ नाटकों, विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से और देश से दहेज को खत्म करने की मांग के लिए अदालतों का दरवाजा खटखटाकर कई अभियान चलाए गए।

- महिलाओं द्वारा बड़े पैमाने पर अभियान चलाने के कारण कार्यस्थल और अन्य संस्थानों में महिलाओं का यौन उत्पीड़न कानून द्वारा दंडनीय अधिनियम बन गया।

**लोगों को जागरूक करना**

महिलाओं के भेदभाव के खिलाफ लड़ने का एक तरीका नुककड़ नाटकों का मंचन, गीत बनाकर और जनसभाओं को आयोजित करके लोगों को जागरूक करना है।



महिलाएं रैलियों द्वारा उनके विरुद्ध हो रहे भेदभाव के खिलाफ लोगों को जागरूक करते हुए

**विरोध प्रदर्शन**

जब महिलाओं के खिलाफ कुछ गंभीर अन्याय होता है, या उनके हितों को चोट पहुंचाने वाला कानून पारित किया जाता है, तो विभिन्न महिला समूहों द्वारा विरोध प्रदर्शन किया जाता है।

जनसभाएं निकालना और धरना प्रदर्शन करना लोगों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।

**एकजुटता दिखाना**

महिलाओं द्वारा एक साथ दिखाई गई एकजुटता उन्हें विभिन्न मुद्दों से लड़ने में मदद करती है। जब महिलाएं एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहानुभूति रखती हैं, तो महिलाओं का आंदोलन मजबूत होता है।



कैंडल लाईट मार्च भी महिलाओं के साथ  
एकजुटता दिखाने का एक तरीका है

## परिवेश

हमारे चारों ओर परिवेश कुछ इस प्रकार से बना हुआ है कि लड़कों को ऐसी नौकरियों के लिए प्रेरित किया जाता है जिसमें अधिक वेतन मिल सके ऐसा ना होने पर उन्हें चिढ़ाया जाता है।

## परिवर्तन के लिए सीखना

आज अधिकांश बच्चे स्कूल जाते हैं परंतु अतीत में ऐसा नहीं होता था केवल कुछ एक लोग ही पढ़े लिखे थे तथा अधिकांश लोग अपने घर के व्यवसाय को ही अपना लेते थे या बुजुर्ग लोग जो कार्य करते हैं उसे ही सीख लेते थे और अपनी आजीविका चलाते थे घर परिवार में लड़कियों की स्थिति और भी खराब थी वह घर का सारा कार्य करती तथा व्यवसाय में सहयोग भी करती थी उदाहरण : के लिए कुम्हार के व्यवसाय में स्त्रियां मिट्टी एकत्र करती थी और बर्तन बनाने के लिए उसे तैयार करती थी।

## वर्तमान समय में शिक्षा और विद्यालय

भारत में हर 10 वर्ष पश्चात जनगणना होती है जिसमें विभिन्न आंकड़े सामने आते हैं 1961 की जनगणना में पुरुषों का 40% शिक्षित था इसकी तुलना में स्त्रियों 15% भाग पढ़ा लिखा।

2011 की जनगणना के अनुसार पुरुषों का 82% शिक्षित था तथा स्त्रियों 65% भाग पढ़ा लिखा था।

सब लड़कियों की श्रेणी की तुलना में अनुसूचित जाति (SC) अनुसूचित जनजाति (ST) की लड़कियों की स्कूल छोड़ने की दर अधिक है।

## NCERT SOLUTIONS

## प्रश्न (पृष्ठ संख्या 67)

प्रश्न 1 आपके विचार से महिलाओं के बारे में प्रचलित रूढ़िवादी धारणा कि वे क्या कर सकती हैं और क्या नहीं, उनके समानता के अधिकार को कैसे प्रभावित करती है ?

उत्तर :- महिलाओं के बारे में प्रचलित रूढ़िवादी धारणाएँ हैं कि वे एक अच्छी नर्स बन सकती हैं या ये वैज्ञानिक नहीं बन सकती हैं, क्योंकि इसके लिए तकनीकी दिमाग की जरूरत होती और महिलाएं और लड़कियां तकनीकी कार्यों में सक्षम नहीं होती। ये सब विचार महिलाओं के समानता के अधिकार को अवश्य ही प्रभावित करती हैं। ऐसे में कई महिलाएँ उन जगहों में जाने से पहले ही डर जाती हैं जहाँ महिलाओं को जाने के लिए रोका जाता है। क्योंकि उनके किसी चीज़ में भाग लेने से पहले ही उनके हौसलों को तोड़ दिया जाता है।

प्रश्न 2 कोई एक कारण बताइए जिसकी वजह से राससुंदरी देवी, रमाबाई और रूकैया हुसैन के लिए, अक्षर ज्ञान इतना महत्वपूर्ण था ।

उत्तर :- राससुंदरी देवी, रमाबाई और रूकैया हुसैन के लिए अक्षर ज्ञान निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण था क्योंकि तत्कालीन समाज में लड़कियों को अक्षर ज्ञान प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। वे ऐसा करके लड़कियों के अक्षर ज्ञान के महत्व को समाज के सामने लाना चाहती थीं। उस समय यह माना जाता था कि पत्नी का अक्षर ज्ञान पति के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। वे इस धारणा को गलत साबित करना चाहती थीं ।

प्रश्न 3 “ निर्धन बालिकाएँ पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं क्योंकि शिक्षा में उनकी रुचि नहीं है। पृष्ठ 17 पर दिए गए अनुच्छेद को पढ़ कर, स्पष्ट कीजिए कि यह कथन सही क्यों नहीं है।

उत्तर :- यह कथन कहा गया है कि निर्धन बालिकाएँ पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं, क्योंकि शिक्षा में उनकी रुचि नहीं है, ऐसा बिल्कुल नहीं है। इसके कई कारण हैं। जैसे :- ग्रामीण क्षेत्रों में न तो पर्याप्त मात्रा में स्कूल हैं और न ही यहाँ पर्याप्त मात्रा में शिक्षक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कई परिवार बहुत गरीब हैं। ये परिवार धन के अभाव के कारण अपनी लड़कियों को विद्यालय नहीं भेज पाते। अनेक गांवों में स्कूल दूर होता था इसलिए माँ बाप लड़कियों को पैदल भेजना सही नहीं मानते थे।

प्रश्न 4 क्या आप महिला आंदोलन द्वारा व्यवहार में लाए जाने वाले संघर्ष के दो तरीकों के बारे में बता सकते हैं। महिलाएं क्या कर सकती हैं और क्या नहीं, इस विषय पर आपको रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़े, तो आप पर हुए तरीकों में से कौन - से तरीकों का उपयोग करेंगे ? आप इसी विशेष तरीके का उपयोग क्यों करेंगे ?

उत्तर :- महिला आंदोलन द्वारा व्यवहार में लाए गए संघर्ष के कई तरीके हैं जिसमें से निम्नलिखित हैं:-

1. **जागरूकता अभियान** - यह महिला आंदोलन का सुनियोजित ढंग से अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने का एक तरीका है। इस तरीके के चलते 1997 में सर्वोच्च न्यायालय ने कार्य के स्थान पर तथा शिक्षण संस्थाओं में महिलाओं की यौन प्रताड़ना से सुरक्षा के लिए आवश्यक दिशा - निर्देश जारी किए थे।
2. **विरोध प्रदर्शन** - यह सरकार की किसी अप्रिय नीति के विरुद्ध लोगों के संघर्ष का तरीका है। जैसे:- महिलाओं द्वारा पदों के आरक्षण के लिए संघर्ष करना और इसके लिए विरोध प्रदर्शन करना। यदि हमें रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़े, तो हम प्रचार अभियान का सहारा लेंगे। और लोगों को इस विषय में जागरूक करेंगे कि महिलाएँ वे सभी कार्य कर सकती हैं, जो पुरुष करते हैं।